

भारत की प्रत-व्यापार व्यवस्था

यह एडिटरियल 26/04/2022 'हद्वि बजिनेसलाइन' में प्रकाशित "Countertrade can Work in Crisis Situations" लेख पर आधारित है। इसमें अन्य देशों के साथ भारत की 'काउंटरट्रेड' व्यवस्थाओं और भारत के लिये एक 'काउंटरट्रेड नीति' की आवश्यकता के संबंध में चर्चा की गई है।

संदर्भ

रूस पर प्रतबिंधों (जसिने भारत के लिये रूस के साथ व्यापार में डॉलर में प्राप्ति और भुगतान दोनों को बाधित किया है) से बने व्यापक दबाव को देखते हुए भारतीय रज़िर्व बैंक (RBI) रूस के केंद्रीय बैंक के साथ मिलकर एक ऐसे फ़रेमवर्क के निर्माण पर कार्य कर रहा है जहाँ अंतरराष्ट्रीय लेनदेन के लिये रुपए के संभावित अधिकाधिक उपयोग के साथ दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार एवं बैंकिंग परचालन को सुचारू किया जा सके।

- भारत ने अतीत में भी रूस, नेपाल, ईरान, बांग्लादेश और कुछ पूर्वी यूरोपीय देशों सहित कई देशों के साथ अपने व्यापार के लिये रुपए में भुगतान किया है या भुगतान प्राप्त किया है।
- अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतबिंधों के समक्ष मौजूदा व्यापार एवं वित्तीय नपिटान तंत्र की कमज़ोरियों और वदेशी मुद्रा संकट या भुगतान संतुलन की कठिनाइयों का सामना कर रहे देशों के साथ व्यापार करने में कठिनाइयों को देखते हुए ऐसे देशों के साथ लेनदेन को सुवधिजनक बनाने के लिये एक वैकल्पिक ढाँचे की रूपरेखा तैयार करने की आवश्यकता है। प्रत-व्यापार या 'काउंटरट्रेडिंग' (Countertrading) इसका एक प्रभावी तरीका हो सकता है।

काउंटरट्रेडिंग क्या है?

- काउंटरट्रेड मूल रूप से एक वस्तु वनिमिय (barter) या अर्द्ध वस्तु वनिमिय (quasi-barter) व्यवस्था है जो स्पष्ट रूप से आयात और निर्यात लेनदेन को संयुक्त करती है। यह मुद्रा या सीमा-पार भुगतान चुनौतियों का सामना कर रहे देशों के लिये अंतरराष्ट्रीय लेनदेन का एक महत्त्वपूर्ण तरीका बनकर उभरा है।
- काउंटरट्रेड एक अंतरराष्ट्रीय बिक्री को संरचित करने का एक वैकल्पिक साधन है जब भुगतान के पारंपरिक साधन जटिल होते हैं या मौजूद नहीं होते हैं। काउंटरट्रेड का सबसे आम रूप वस्तु वनिमिय है।

काउंटरट्रेड का महत्त्व

- काउंटरट्रेड नमिनलखिति वषियों से एक प्रभावशील तरीका प्रस्तुत करता है:
 - प्रतबिंधों, मुद्रा नयितरणों, गैर-टैरिफि बाधाओं जैसी सुरक्षात्मक व्यापार नीतियों से उत्पन्न जोखिमों को कम करना
 - वदेशी मुद्रा के बाह्य प्रेषण से जुड़ी चुनौतियों से नपिटना, जहाँ भुगतान के पारंपरिक साधन मौजूद नहीं हैं या कई कारणों से जटिल हैं
 - सामरिक खनजि संसाधनों (जहाँ भारत उल्लेखनीय आयात निर्भरता रखता है) की आपूर्ति सुनिश्चित करने में नहिति चुनौतियों से नपिटना

काउंटरट्रेड के मामले में भारत की स्थिति

- **इराक के साथ वस्तु वनिमिय व्यापार समझौता:** भारत ने अतीत में कई प्रकार की काउंटरट्रेड व्यवस्था में प्रवेश किया है, जसिमें 'ऑइल फॉर फूड' कार्यक्रम के तहत इराक के साथ एक वस्तु वनिमिय व्यापार समझौता शामिल है। इस व्यवस्था के तहत इराक भारत से चावल और गेहूँ की प्राप्ति के बदले एक नशिचति मूल्य पर एक नशिचति मात्रा में तेल की दैनिक आपूर्ति करता है।
- **मलेशिया के साथ 'काउंटर-परचेज' समझौता:** भारत ने मलेशिया के साथ एक काउंटर-परचेज समझौता (Counter Purchase Agreement) संपन्न किया था, जसिके तहत मलेशिया में IRCON (Indian Railway Construction) इंटरनेशनल लिमिटेड द्वारा एक रेल निर्माण परियोजना शुरू की गई थी और मलेशिया सरकार ने भारत को समतुल्य मूल्य के पाम ऑइल की आपूर्ति के साथ IRCON को भुगतान किया था।
- **सोवियत संघ के साथ 'बाय-बैक' व्यवस्था:** काउंटरट्रेड की ऐसी ही एक व्यवस्था पूर्ववर्ती सोवियत संघ के साथ 'बाय-बैक' व्यवस्था (Buyback Arrangement) के रूप में कायम की गई थी, जहाँ भारत के राष्ट्रीय कपड़ा नगिम लिमिटेड (National Textiles Corporation Ltd.- NTC) ने सोवियत संघ से 200 परषिकृत करघे खरीदे थे और बदले में सोवियत संघ को बायबैक प्रतबिधता के तहत उत्पादित कपड़ा का 75% खरीदना था।

- **ईरान के साथ समाशोधन व्यवस्था:** भारत ने ईरान के साथ एक समाशोधन व्यवस्था का नरिमाण कयि था जिसके तहत वर्ष 2012 में भारत और ईरान के बीच एक रुपया भुगतान तंत्र स्थापति कयि गया था । इसके अंतर्गत भारत द्वारा आयात के लयि भुगतान से संचति रुपये का उपयोग ईरान को उत्पादों, परयोजनाओं और सेवाओं के नरियात के भुगतान के लयि कयि गया था ।
- **वयितनाम के साथ ऋण के बदले माल व्यवस्था:** भारत ने वयितनाम के साथ ऋण के बदले माल मॉडल (Debt-for-Goods Arrangement) का नरिमाण कयि था, जहाँ इंडिया एक्ज़मि बैंक ने वयितनाम को वाणजियकि ऋण सुवधि प्रदान की थी और बदले में भारतीय खाद्य नगिम (FCI) ने वयितनाम से चावल का आयात कयि और IDBI/इंडिया एक्ज़मि बैंक को इस आयात के लयि भुगतान कयि ।

ऋण के बदले माल मॉडल (Debt-for-Goods Arrangement) क्या है?

- 'ऋण के बदले माल' मॉडल एक काउंटरट्रेड लेनदेन है जहाँ कोई देश वकिस परयोजना के लयि ऋण प्राप्त करता है और ऋणदाता देश को ऋण का पूरण या आंशकि पुनरभुगतान माल या सेवाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से कयि जाता है ।
- ऋणदाता देश के लयि ऐसा मॉडल वकिस वतितपोषण से संबद्ध उच्च मूल्य-वर्द्धति वस्तुओं एवं सेवाओं के नरियात के लयि अवसर प्रदान कर सकता है, जबकि उधारकर्त्ता देश से आयात के माध्यम से महत्त्वपूर्ण कच्चे माल की आपूर्ति को सुरक्षति करने में भी मदद कर सकता है ।
- उधारकर्त्ता देश के लयि ऐसा मॉडल दुर्लभ वदिशी मुद्रा संसाधनों की कमी के बनिा उल्लेखनीय अवसंरचना वकिस के वतितपोषण में मदद करता है ।

काउंटरट्रेड नीति

- वर्षों से वभिन्नि काउंटरट्रेड लेनदेन के बावजूद भारत में काउंटरट्रेड के लयि कोई नश्चिति नीति मौजूद नहीं है ।
- फिलीपींस, इंडोनेशिया और चीन जैसे कई देशों में व्यापक काउंटरट्रेड नीतियाँ मौजूद हैं, जनिहोने बढ़ती अनश्चितिताओं के परदृश्य में भी महत्त्वपूर्ण वस्तुओं के आयात को सुरक्षति रखने में उनकी मदद की है ।
- चीन महत्त्वपूर्ण कच्चे माल की आपूर्ति को सुरक्षति करने और मूल्य-वर्द्धति नरियात को बढ़ावा देने के लयि काउंटरट्रेड के एक प्रकार 'ऋण के बदले माल' का वशिष रूप से उपयोग करता रहा है ।

काउंटरट्रेड से संलग्न चुनौतियाँ

- काउंटरट्रेड के साथ संलग्न प्रमुख चुनौतियों में से एक यह है कि संभव है कि भागीदार देशों द्वारा काउंटरट्रेड के लयि चहिनति कयि गए मालों की भारत में पर्याप्त मांग नहीं हो ।
- सौदे का मूल्य (जहाँ माल का आदान-प्रदान हो रहा हो) अनश्चिति हो सकता है, जिससे उल्लेखनीय मूल्य अस्थिरता की स्थति बन सकती है ।
- कसि भी अपरंपरागत रणनीति की तरह काउंटरट्रेडिंग में भी अधिक समय लेने की प्रकृति होती है । अच्छे ट्रेड के लयि सौदेबाजी होगी, इस प्रकार सभी पक्षों के संतुष्ट होने तक वारता की लंबी प्रकरयि की स्थति बनेगी ।
- इसमें ब्रोकरेज सहति उच्च लेनदेन लागतें भी आएँगी । खरीदार की तलाश, बचौलियों को कमीशन एवं अन्य रूपों में लागतों में तेज़ी से वृद्धि हो सकती है ।
- लॉजस्टिकस संबंधी समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं, वशिष रूप से यदापि वस्तुएँ संलग्न हों ।
- व्यापार कयि जा रहे माल के मूल्य पर वृहत अनश्चितिता और माल की गुणवत्ता पर अनश्चितिता की स्थति उत्पन्न हो सकती है ।

आगे की राह

- **एक काउंटरट्रेड नीति:** बढ़ती हुई अनश्चितिता और व्यापार के लयि एक वैकल्पकि तंत्र की प्रकट आवश्यकता के आलोक में भारत के लयि 'ऋण के बदले माल' मॉडल के प्राधानों के साथ काउंटरट्रेड के लयि एक रूपरेखा वकिसति की जा सकती है ।
 - इंडिया एक्ज़मि बैंक के हालयि अध्ययन में 30 देशों की पहचान की गई है, जहाँ ऋण के बदले माल मॉडल के तहत एक काउंटरट्रेड तंत्र वकिसति करना वविकपूर्ण होगा ।
 - ये संसाधन संपन्न देश हैं जो वदिशी मुद्रा के बाह्य प्रेषण पर प्रतबंधों का सामना कर रहे हैं अथवा ऋण संकट में हैं या ऋण संकट के उच्च जोखमि का सामना कर रहे हैं ।
 - इन देशों में शामिल हैं: नाइजीरिया, लीबिया, वेनेजुएला, ईरान, कांगो गणराज्य, सूडान, यमन, जाम्बिया, तंजानिया, मोजाम्बिक, बेलारूस, फजी, नकारागुआ, क्यूबा, सीरिया, लेबनान आदि ।
- **मुद्रा संबंधी मामलों को संबोधति करना:** भारत के लयि काउंटरट्रेड नीति स्थानीय मुद्रा व्यापार (लेकनि यहीं तक सीमति नहीं) के लयि एक तंत्र सहति एक समग्र व्यवस्था हो सकती है ।
 - इस नीति में अंतरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधति मुद्रा संबंधी जोखमिों को कम करने से लेकर ज़रूरतमंद वकिसशील देशों को उनके दुर्लभ वदिशी मुद्रा भंडार को कम कयि बनिा वकिस वतित सहायता प्रदान करने और भारत के साथ व्यापार करने की क्षमता रखने वाले (लेकनि वदिशी मुद्रा चुनौतियों का सामना कर रहे) नए भौगोलकि क्षेत्रों में नरियात बढ़ाने तक का एक बहुआयामी दृष्टिकोण शामिल हो सकता है ।
 - काउंटरट्रेड तंत्र भारत सरकार के वकिसात्मक भागीदारी कारयक्रमों में पुनरभुगतान प्राप्त करने के दृष्टिकोण से भी वचिार करने योग्य होगा (वशिष रूप से संसाधन प्रचुर देशों में) ।
- **'स्वचि ट्रेड' मॉडल:** भारत की काउंटरट्रेड नीति में एक स्वचि ट्रेड मॉडल (switch trade model) का भी प्राधान होना चाहयि ।
- स्वचि ट्रेडिंग मॉडल के अंतर्गत कसि अंतरराष्ट्रीय ट्रेडिंग हाउस को उत्पाद की कुल खरीद के लयि एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करने हेतु संलग्न कयि जा सकता है और लेनदेन के नरियात चरण के नपिटान के लयि सहवर्ती भुगतान कयि जा सकता है ।

नश्कर्ष

डॉलर से जुड़ी अंतरराष्ट्रीय व्यापार व्यवस्था ने व्यापार समझौतों को अमेरिका की कार्रवाई के लिये अतिसंवेदनशील बना दिया है। कुछ देशों के साथ व्यापार संबंधों को नलिंबति करने के बढ़ते दबाव के बीच भी भारत ने अपने आर्थिक हितों की रक्षा करने के लिये एक मज़बूत रुख अपना रखा है। व्यापार समझौतों को पेश चुनौतियों से बचने के लिये एक व्यापक तंत्र के माध्यम से भारत को अपने रुख को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

अभ्यास प्रश्न: "काउंटरट्रेडिंग ऐसे देशों के साथ लेनदेन की सुविधा के लिये एक वैकल्पिक ढाँचा हो सकता है जो राजकोषीय संकट के शिकार हैं या अमेरिकी प्रतर्बिंधों का खतरा झेल रहे हैं।" चर्चा कीजिये।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/countertrade-policies-in-india>

